'कसप' में अभिव्यक्त रोमान और यथार्थ

शिखा
(शोधार्थी) हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
gargshikha37@gmail.com

सारांश

रोमान और यथार्थ साहित्य के अभिन्न अंग हैं एक के अभाव में दूसरे की कल्पना करना संभव नहीं है। साहित्य में रोमान का संबंध भावुकता ,क्रांतिकारिता ,असाधारणता ,एवं वर्तमान या यथार्थ के पलायन से है और यथार्थ का संबंध वर्तमान जीवन की जटिलताओं, विसंगतियों, विद्रूपताओं ,विडंबनाओं से है। साहित्यकार का उद्देश्य साहित्य में जीवन के सभी पक्षों ,स्थितियों को दर्शाना है। मनोहर श्याम जोशी ने रोमान की चादर लपेटकर यथार्थ को उजागर करने का प्रयास 'कसप' उपन्यास में किया है। क्योंकि हम जिस समय में जी रहे हैं वहाँ सब कुछ दबाकर, ढककर रखने का उपक्रम किया जाता रहा है। परिणामस्वरूप गलीज स्थितियाँ उत्पन्न होती जा रही है। आधुनिक समाज में साहित्यकार के लिए सीधे-सीधे कोई बात कहना सरल नहीं है अत: 'कसप' उपन्यास में मनोहर श्याम जोशी ने प्रेम के माध्यम से यथार्थ को उजागर करने का प्रयास किया है।

की वर्ड- *रोमान, यथार्थ , प्रेम के स्वरूप का चित्रण ,प्रेम का बदलता हुआ स्वरूप, कुमाऊँनी भाषा के शब्दों का प्रयोग, भदेसपन का चित्रण, सौन्दर्य की प्राचीन मान्यताओं का खंडन ,व्यंग्यात्मकता , खिलंदड़ी भाषा*

शोध विस्तार

मनोहर श्याम जोशी अपनी सृजनात्मकता से निरंतर साहित्य जगत को समृद्ध करते रहे हैं। उन्होंने कई उपन्यासों की रचना की है जैसे- 'कुरु-कुरु स्वाहा', 'कसप', 'हमज़ाद', 'हरिया हरक्यूलीज़ की हैरानी', 'क्याप', 'कौन हूं मैं'। 'कसप' उपन्यास अपनी विशिष्ट प्रेम कहानी के कारण चर्चित रहा है। यह एक ऐसी कहानी है जिसमें उदासी भी है मजाक भी है और मन को भिगोकर रखने की मार्मिकता की अपार क्षमता भी है।

हिन्दी साहित्य में प्रेम परक उपन्यासों की एक लंबी परंपरा रही है जैसे- 'चित्रलेखा', 'नदी के द्वीप', 'गुनाहों के देवता' आदि किंतु 'कसप' अपनी भावनात्मकता व नवीन शिल्प के कारण मनोहर श्याम जोशी की एक अद्भुत और अनुठी कृति है।'कसप' में उन्होंने प्रेम के इर्द-गिर्द कथा का ताना-बाना बुनकर समाज की विसंगति, विद्रूपता को उजागर किया है जिसे हम देख कर भी अनदेखा और जान कर भी अनजान बनते हैं या जिसके बारे में हम जानते हुए बात करना नहीं चाहते हैं। मनोहर श्याम जोशी ने उन्हीं प्रसंगो, तथ्यों पर खुलकर बात की है जिससे रूबरू होना मनुष्य के लिए आवश्यक है। मनोहर श्याम जोशी के शब्दों में –"पता है मगर नहीं पता है, जानता हूँ मगर नहीं जानता हूँ। इश्क में ऐसा भी होने वाला ठहरा बल।"[1]

'कसप' उपन्यास में मनोहर श्याम जोशी ने प्रेम के माध्यम से जीवन की वास्तविकता को समझाने का प्रयास किया है। उपन्यासकार ने इस उपन्यास के माध्यम से उस जीवन की ओर संकेत किया है जो जीने लायक है किंतु कुछ परिस्थितियों के कारण व्यक्ति वह जीवन जीने में असमर्थ है। और जब वह इन परिस्थितियों पर विचार करता है तो उसके भीतर उदासी छा जाती है और वह उस उदासी को दूर करने के लिए निरंतर संघर्ष करता रहता

है। अंतत: वह देखता है कि जीवन ऐसा ही है और मनुष्य इसी जीवन को जीने के लिए अभिशप्त है। लेखक के अनुसार –"जीवन में क्या-क्या नहीं होता यह जानते समझाते हुए जिज्ञासु का पूरा जीवन बीत जाता है। विविध है ,विचित्र है मायावी जीवन।"[2]

'कसप' कुमाऊँनी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है- क्या जाने। व्यक्ति के जीवन की परिस्थितियाँ निरंतर गतिशील है, परिवर्तनशील है।किन्तु जब हम परिवर्तन के कारणों और मानव जीवन को समझने का प्रयास करते हैं तो हमारे समक्ष एक ही शब्द आता है-'कसप'। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के शब्दों में-"कई लोगों में जिज्ञासा तीव्रतम होती है और जिज्ञासा होती ही इसलिए है क्योंकि समाधान ही नहीं होता । अंतिम रूप में समाधान ही हो जाए तो फिर जिज्ञासा ही क्यों होगी? ऐसे लोगों के पास एक असमंजस समाधान होता है- कसप।"[3]

मनोहर श्याम जोशी जीवन के यथार्थ को उजागर करने के लिए 'कसप' उपन्यास में अनेक अतिवादी प्रसंगों की उद्भावना करते हैं। वे रोमान के माध्यम से जीवन की वास्तविकता को पाठक के समक्ष उद्घाटित करते हैं। क्योंकि रोमान वास्तव में है जीवन का सत्य ही । रोमान के माध्यम से ही वे यथार्थ का ताना-बाना बुनते हैं। कथावस्तु का विकास वे इस प्रकार करते हैं कि तत्कालीन ग्रामीण समाज की वास्तविकता पाठक के समक्ष स्वयं ही उजागर हो जाती है। डॉ अजय तिवारी के शब्दों में –"सच्चे यथार्थवादी कलाकार की तरह वे इकहरे कार्य-कारण की धारणा से हटकर घटना में निहित अनेक अंत: सूत्रों को पहचानने की कोशिश करते हैं"।[4]

कथावस्तु का प्रारंभ अल्मोड़ा के कस्बा क्षेत्र से शुरू होता है।अल्मोड़ा के जीवन के माध्यम से मनोहर श्याम जोशी पाठक को उस प्राचीन संस्कृति में लेकर जाते हैं जहाँ लड़कियों को स्वतन्त्रता नहीं दी जाती । वहाँ की मान्यता है कि लड़की को घर में रहना चाहिए। उसे घर गृहस्थी को समझना चाहिए। बेबी को भी यही समझाया जाता है कि उसे गृहकार्य, रीति-रिवाजों, चूल्हा-चौकी में ध्यान देना चाहिए। किंतु बेबी ऐसी खिलंदड़ी लड़की है जो इनकी और तनिक भी ध्यान नहीं देती वह अपने मन मुताबिक कार्य करती है। बेबी से कहा जाता है-" यह अल्मोड़ा है अल्मोड़ा । यहां बदनाम कर देते हैं लोग। सलवार- कमीज, फ्राक या हाफ-पेण्ट मत पहना कर। ऊधम मत मचाया कर। लोगों के सामने फीं-फीं मत हँसा कर। साड़ी का पल्लू गिरने मत गिरने दिया कर।"[5] किन्तु बेबी है कि अपना नाम सार्थक करने में लगी हुई है। वह उन सभी रूढ़ियों ,परम्पराओं को खंडित करती है।जो सहज मनुष्य जीवन जीने के आड़े आती हैं। बेबी ऐसी नायिका है जो अपने निर्णय स्वयं लेने में विश्वास करती है । वह उस पुरुष वर्चस्ववादी सत्ता को चुनौती देती है जो स्त्री को दोयम दर्जे का मान कर उसके अधिकारों का हनन करती है। डी.डी से विवाह करने का निर्णय बेबी स्वयं लेती है। और डी. डी द्वारा विवाह के निर्णय से पीछे हटने पर वह डी.डी से प्रश्न करती है "तुझे मुझसे शादी करनी थी कि मेरे घरवालों से ? मुझसे करनी थी? तो मैं कह रही हूँ हो गई शादी । मेरी शादी के मामले में मुझसे ज़्यादा कौन कह सकने वाला हुआ।"[6]

उपन्यास में मनोहर श्याम जोशी ने मानवीय संबंधों के यथार्थ को उजागर करने का प्रयास किया है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अत: उसके मानवीय संबंध विभिन्न परिस्थितियों के संघात से निर्मित होते हैं। मानवीय संबंधों को सामाजिक रूढ़ियां, परंपराएं, संस्कृति, पूर्वाग्रह, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। जोशीजी एक ऐसे उपन्यासकार है जो मानवीय संबंधों को एक पारखी की नज़र से देखते हैं और उन संबंधों का विश्लेषण करते हैं। साथ ही यह बताने का प्रयास करते हैं कि मानवीय संबंधों में अस्थायित्व का क्या कारण है।

मनुष्य समाज में रहता है और समाज में भिन्न-भिन्न संस्कृति के लोग रहते हैं अतः मनुष्य के मानस पर भिन्न-भिन्न संस्कृति का प्रभाव भी पड़ता है। उपन्यास में डी.डी.पर पड़े कुमाऊँनी संस्कृति एवं पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव का चित्रण भी किया गया है। डी.डी.देखता है कि इन दोनों संस्कृतियों के प्रभाव स्वरूप उसमें परिवर्तन आ गया है ।उसकी स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है जब उसे आभास होता है कि वह इन दोनों ही संस्कृति में रचा – बसा नहीं है। वह जिस कुमाऊँनी संस्कृति को छोड़कर बंबई जाता है वह कुमाऊँनी संस्कृति उसकी स्मृति से हटती नहीं है ।वह सोचता है- "परिस्थितियाँ बदलती है उसके साथ-साथ परिस्थिति जन्य परिवर्तन होते रहते हैं। स्वयं इसे देवीदत्त ने चाहा था।तब इसका बुनियादी परिवर्तन न होने से दुखी होना कुछ समझ में नहीं आता।"[7]

प्रेम के द्वारा मनोहर श्याम जोशी ने जीवन की वास्तविकता को समझाने का प्रयास किया है क्योंकि प्रेम द्वारा ही मनुष्य अपने संपूर्ण समस्याओं का अंत कर सकता है। प्रेम जीवन का मूल तत्व है। प्रेम ही है जो आधुनिक मनुष्य को स्वस्थ कर सकता है। मनोहर श्याम जोशी के शब्दों में-"जिंदगी की खास खोदने में जुटे हुए हम जब कभी चौंककर घास ,घाम और खुरपा तीनों भुला देते हैं तभी प्यार का जन्म होता है।.....प्यार ही है जो पीछे से आकर हमारी आंखें गदोलियों से ढक देना हमें चौंका कर बाध्य करता है कि घड़ी दो घड़ी घास,घाम और खुरपा भूल जाएं।"[8]

प्रेम मानवीय गुण हैं प्रेममय होने पर व्यक्ति किसी स्थान घटना विशेष पर ध्यान नहीं देता। 'कसप' में नायक और नायिका का मिलन अस्थायी टट्टी में होता है। यह लेखक की सृजन शीलता का नायाबपन है कि उन्होंने नायक-नायिका के मिलन के लिए भदेस जगह को चुना है। लेखक के शब्दों में-"उसका मुँह खुला रह जाता है जीन सिम्मंस नुमा एक अपरिचित लड़की। गोरी चिट्टी। गालों में ललाई। नाक थोड़ी सी घुमी हुई। बाल सुनहरे। आंखें बड़ी- बड़ी और चपल। लड़की के हाथ में ट्र है। ट्रे में चाय का कुल जमा एक गिलास, जो शायद डी.डी. के लिए है। गिलास हिल रहा है इस हास्यकंप में । कोई फौजी इस जीन सिम्मंस को झिड़क रहा है। और नायक फिर से धप्प से बैठ गया है। और जब बैठ ही गया है तब बाकायदा इजार बंद खोल कर ही क्यों ना बैठे?वह इज़ारबंद का सिरा खींचता है लेकिन अफसोस यह गलत सिरा है गाँठ खुलने की बजाय दोहरी हो जाती है।"[9]

मनोहर श्याम जोशी की यह प्रेम कहानी अब तक के उपन्यास की परंपरा से सर्वथा भिन्न है। उन्होंने भदेस के भीतर से प्रेम की संरचना को उजागर किया है और प्रेम के साथ जो रोमानियत जुड़ी है उसे तोड़कर यथार्थ स्थितियों को सजीव किया है। वे यह दर्शाते हैं कि भदेस जीवन का ही एक पहलू है । हम चाह कर भी उससे मुंह नहीं मोड़ सकते। हमारा समाज नैतिकता का आड़ लेकर भदेस से बचने का प्रयास करता है ।मनोहर श्याम जोशी इसे अवांछित बताते हुए कहते हैं-"भदेस से परहेज हमें भीरू बनाता है और अंततः हम जीवन के सर्वाधिक भदेस तथ्य मृत्यु से आंखें चुराना चाहते हैं।"[10] 'क्याप' में भी मनोहर श्याम जोशी रोमान के माध्यम से सौंदर्य की परंपरागत मान्यताओं को तोड़ते हुए नजर आते हैं। 'क्याप' का नायक 'मैं' उत्तरा के प्रेम में सब गोमूत्र उसके लिए श्रंगार रस उत्पन्न करने वाला सेंट बन जाता है। कथावाचक के शब्दों में –"मैं गौंत को इस तरह सूँघने लगा मानो वह इवनिंग इन पेरिस जैसा कोई विलायती सेंट हो।"[11]

मनोहर श्याम जोशी उन प्रसंगों पर खुलकर बात करते हैं जिन प्रसंगों के बारे में हम जानते समझते हुए भी बात करना नहीं चाहते या उनसे दूर भागते हैं मनोहर श्याम जोशी मानव जीवन के प्रमुख पक्ष काम पर खुलकर बात करते हैं और उस वास्तविकता से परिचित कराते हैं जिसे नैतिकता के कारण ढक-पोंत कर रखा जाता है। वे

बताते हैं कि प्रेम की तरह काम भी जीवन का अनिवार्य और आधारभूत आवश्यकता है जिस तरह जीवन में निद्रा आलस्य आहार आवश्यक है उसी तरह काम भी।"काम'रूप बिन प्रेम न होई ,काम रूप जहां प्रेम न सोई।"[12]

काम संबंधों पर बातचीत करने के कारण जोशी जी पर अश्लीलता का आरोप भी लगाया जाता है। किंतू काम संबंध पर बात करना या उनका चित्रण करना अश्लीलता नहीं है। अपितु यह जीवन की वास्तविकता है। जीवन की वास्तविकता को जानना और उस पर चिंतन करना कोई अश्लीलता नहीं है। डॉ कुसुमलता मलिक के शब्दों में-"काम जीवन का आधारभूत तत्व है जिस पर कॉमिक जीवन का पौधा उगता है।"[13] 'कसप' में मनोहर श्याम जोशी के चरित्र बेबी, गुलनार और डी.डी तीनों ही काम की मांग करते हुए दिखाई देते हैं। और काम के विषय पर बात करते हुए नैतिकता के प्रश्न से भी नहीं टकराते क्योंकि वे मानते हैं कि यह जीवन का सत्य है और मनुष्य चाह कर भी इसे छिपा नहीं सकता। मनोहर श्याम जोशी काम-सम्बन्धों के विषय में व्याप्त रूढ़िवादी सोच पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं-" कितना ज्यादा कूड़ा –कबाड़ा हमने जमा कर रखा है छत से लगे कमरे में। इस देश में जो लोग इस ऊपर ले गोदाम की सफाई के लिए आगे बढ़े। वे भी आखिर में कुछ और कबाड़ इसमें जोड़ गए। इस देश और इस जाति का उद्धार संभव नहीं, ऐसा कह रहा है नायक और कामना कर रहा है कि इस देश और जाति पर उसकी यह डॉक्यूमेंट्री इतनी अच्छी हो कि उसके लिए इस देश और इस जाति से मुक्ति मिलने का द्वार खुल सके। इस देश में जन्म लेना मूर्खता थी, जिंदा रहना मूर्खता है।"[14]

डी.डी पश्चिमी संस्कृति से आक्रांत है। इसी सभ्यता के चकाचौंध में वह अपने जीवन के अनिवार्य व आधारभूत तत्त्व प्रेम को भी भूल चुका है जो उसके जीवन की अमूल्य धरोहर थी। वह रोमानियत में लिपटे हुए यथार्थ को नहीं पहचान पाया जिसने उससे उसके सभी रिश्ते छीन लिए। भूमंडलीकरण के प्रभाव स्वरूप वह अपने संबंधों, मूल्यों, प्रेम से अधिक महत्व व्यावहारिकता को देता है। उसे लगता है कि व्यावहारिकता अर्थात् पूँजी के बल पर वह समाज में अपनी साख बना सकता है। वह चाहता है कि "किसी के योग्य बनते-बनते इस योग्य बन जाए कि गुलनार की तरह उसे भी भारतीय रुपया बहुत सस्ता मालूम होने लगे। जिस भारतीय अमीरी ने उसे हिकारत से देखा है। उसे भारतीय अमीरी को वह हिकारत से देख सके।"[15]

वह सब कुछ को अपने अनुरूप ढालना चाहता है। चाहे वह प्रेम हो, मानवीय मूल्य, मानवीय संस्कृति या मानवीय संबंध हों। किन्तु संसार की वास्तविकता यह है कि व्यक्ति प्रेम, मानवीय संबंधों को अपने अनुरूप नहीं ढाल सकता। क्योंकि यह जीवन है और जीवन में सब कुछ एक समान नहीं हैं। "प्रेम जब यह चाहने लगे कि मैं अपने प्रिय को एक नये आकार में ढाल दूं ।प्रेम जब यह कल्पना करने लगे कि वह जो मेरा प्रिय है मिट्टी का बना है तो मैं उसे मनचाही आकृति दे सकता हूं, ऐसा या वैसा और सिर्फ ऐसा ही और फिर न ऐसा न वैसा बना कर देख सकता हूं अलग-अलग कोणों से और मिट्टी सने हाथों वाले किसी क्षण परम संतोष को प्राप्त हो सकता हूं तब प्रेम, प्रेम रह जाता है कि नहीं इस पर शास्त्रार्थ की अपार संभावना है।"[16]

अंत में डी.डी. स्वयं को ठगा हुआ महसूस करता है। वह अपनी सारी सुख–सुविधाएँ,पूँजी अपने संबंधों के लिए त्यागने हेतु तैयार हो जाता है किन्तु अब उसे समझ आता है कि अब समय निकल चुका है। यही अब उसकी नियति है। लेखक के शब्दों में –"नियति लिखती है हमारी पहली कविता और हम जीवन- भर उसका ही संशोधन

किए जाते हैं। और जिस बेला सदा के लिए बंद करते हैं आँखें ,उस बेला परिशोधित नहीं,वही अनगढ़ कविता नाच रही होती है हमारे स्नायुपथों पर।"[17]

निष्कर्ष:

मनुष्य ज्यों- ज्यों सभ्य होता जा रहा है उसमें जटिलता बढ़ती जा रही है। स्वयं को समय के अनुसार गतिमान करने के लिए मनुष्य बनावटी जीवन जी रहा है और जीवन के छद्म को ही वास्तविकता समझ रहा है। परिणाम स्वरूप वह अपनी सादगी खो रहा है। यही कारण है कि डी.डी. की स्थिति त्रासदमयी हो जाती है। वह प्रेम तत्त्व को मनुष्य में न ढूंढकर पूँजी में ढूँढता है और अंत में वह स्वयं को ठगा हुआ पाता है। अब उसके पास जीवन में वापिस लौटने का कोई मार्ग भी नहीं है। यही मानवीय जीवन है जो अपनी गति से आगे बढ़ता जाता है और मनुष्य पाता है कि उसके जीवन का प्रेम कहीं दूर पीछे छूट जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची;

1 मनोहर श्याम जोशी – कसप ,पृ 62,राजकमल पेपरबैक्स,दूसरी आवृत्ति,2011
2.मनोहर श्याम जोशी – कसप ,पृ 79

3.डॉ कुसुमलता मलिक (सं)- गप्प का गुलमोहर,मनोहर श्याम जोशी,पृ 121,स्वराज प्रकाशन ,प्रथम संस्करण,2011

4.नया ज्ञानोदय पत्रिका (सं) रवीन्द्र कालिया, नवंबर,2011,पृ 108

5. मनोहर श्याम जोशी – कसप ,पृ 12

6.वही पृ 264

7.वही पृ 292

8. वही पृ 9

9. वही पृ 16

10. वही पृ 15

11.मनोहर श्याम जोशी – क्याप ,पृ 59

12.मनोहर श्याम जोशी – कसप ,पृ 86

13.डॉ कुसुमलता मलिक (सं)- गप्प का गुलमोहर,मनोहर श्याम जोशी,पृ 11

14. मनोहर श्याम जोशी – कसप ,पृ 126

15. वही पृ 113

16. वही पृ 242

17. वही पृ 66